THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182325
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP--43—30-1-71—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 S59K Accession No. H1955

Author सिंह, गोपालशरण

Title कादम्बिनी. 1954.

This book should be returned on or before the date last marked below.

कादम्बिनी

लेखक

ठाकुर गोपालशरणसिंह

प्रकाशक

इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), लिमिटेड, इलाहाबाद

१९५४

मूल्य १॥) रुपया

मुद्रक—पी० एल० यादव इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

निवेदन

मैंने कुछ कविताएँ पिछले मई-जून के महीनों में लिखी थीं। उन्हीं का यह संग्रह पाठकों के सामने है। इस संग्रह में सिर्फ तीन कविताएँ पहले की हैं। 'उपवन' और 'चाँदनी' फरवरी १९३३ की रचनाएँ हैं और 'मुसकान' नवम्बर १९२४ में लिखी गई थी।

इस सूचना के अतिरिक्त इन रचनाओं के संबंध में मैं विशेष कहने की आवश्यकता नहीं समझता। मेरी यह धारणा रही है कि कविता में अपना परिचय दे सकने की क्षमता होनी चाहिए। हाँ, यदि मेरी कतिपय पंक्तियों ने सरस हृदयों को स्पर्श किया तो मेरे लिए सुख अनुभव करना स्वाभाविक ही होगा।

नई गढ़ी, रीवाँ
आश्विन वदि ४, १९९४

गोपालशरणसिंह

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—अनन्त छवि	...	...	१
२—कानन	...	...	६
३—अमर गान	...	...	१६
४—प्रेम	...	...	२०
५—अनन्त यौवन	...	...	२३
६—प्रभात	...	...	३०
७—मुसकान	...	...	३२
८—अनन्त संसार	...	...	३६
९—आँसू	...	...	४०
१०—कुसुमाकर	...	...	४२
११—भारत	...	...	४७
१२—शिक्षा	...	...	५१
१३—चाँदनी	...	...	५४
१४—अनन्त जीवन	...	...	६०
१५—उपवन	...	...	६८
१६—विकास	...	...	७४
१७—अनन्त प्रेम	...	...	७८
१८—वन-रोदन	...	..	९२
१९—जीवन-धन	...	...	९४
२०—कामना	...	...	९८
२१—अनन्त उल्लास	...	...	१०३

ठाकुर गोपालशरणसिंह

अनन्त छवि

नित्य नवीन सदा सुखदाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

हरित मनोज्ञ मही का अंचल,
दिग्-वधुओं का चपल दृगंचल,
जलनिधि चंचल और अचंचल,
नक्षत्रों से सजा नभस्थल,

सबमें उसकी छटा समाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

कृषकों के छोटे आँगन में,
दीन जनों के भग्न भवन में,
कुम्हलाये विदलित कानन में,
मुरझाये मृदु सुमन-सुमन में,

है उसने नव-ज्योति जगाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

भुज भर उसे भेंटने के हित,
वसुधा रहती है लालायित,
उसे देख कण-कण में सस्मित,
नभस्थली ने होकर पुलकित,

रवि-शशि की आरती जलाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

हेम-लता से द्वार सजाकर,
मृदु सुमनों का हार बनाकर,
मंजुल चंपक-दीप जलाकर,
पल्लव के पाँवड़े बिछाकर,

मधु-ऋतु स्वागत को है आई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

गिरि-माला है परम प्रफुल्लित,
वनस्थली है विकसित शोभित,
सुमनावलि रहती है हर्षित,
किरणें होती हैं आकर्षित,

देख देख उसकी सुघराई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

कलियाँ मन्द-मन्द मुसकातीं,
छिपी पल्लवों में इठलातीं,
लतिकायें यौवन-मदमातीं,
लज्जा से झुक-झुक हैं जातीं,

वल्लरियाँ भी हैं शरमाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

वारिद-माला है मँड़राती,
नीचे उतरी-सी है आती,
है दामिनी मोद-मदमाती,
झाँक-झाँक कर है छिप जाती,

पावस ने दुंदुभी बजाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

खिली कमल-कलियाँ इतरातीं,
भ्रमरावलियाँ हैं गुण गातीं,
निज शोभा से ही मदमाती,
हँसती शरद्-वधू है आती,

है अनुपम मुख-चन्द्र-जुन्हाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

उसे देख सागर लहराया,
उछल-उछल पैरों तक आया,
पर जब स्पर्श नहीं कर पाया,
लौट गया तब वह शरमाया,

रत्नावलि की भेंट चढ़ाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

उतर सिन्धु में किरण-सहारे,
है मयङ्क अनुपम छवि-धारे,
अवनी तक दृग-ज्योति पसारे,
देख रहे हैं नभ से तारे,

कितनी मृदु कितनी मनभाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

ललित लताओं ने तरुणाई,
किसलय ने सुषमा मनभाई,
मृदु गुलाब ने रुचिर ललाई,
सरसिज ने कोमलता पाई,

कलियों ने मुसकान चुराई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

रवि ने निज प्रकाश फैलाया,
वसुधा ने वैभव बिखराया,
तरुओं ने प्रसून बरसाया,
फूलों ने मधु-कोष लुटाया,

सबने निज-निज प्रीति दिखाई,
है अनन्त छवि क्षिति में छाई।

कानन

विश्व-प्रेम के स्रोत प्रधान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

आदि काल से ही अनादि का
ध्यान सदा धरनेवाले;
निखिल ज्ञान-भाण्डार विश्व का
तुम्हीं रहे भरनेवाले।

ऋषि मुनियों के जन्म-स्थान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

अगणित पत्र-पात्र तरुओं के
तुहिन-बिन्दुओं से भर-भर;
दिनमणि की पूजा करते हो
अर्घ्य-दान तुम दे-देकर।

करते हो नित सदनुष्ठान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

करते हो तुम स्नान नित्य ही
पावन नभ-गङ्गा-जल से;
किस मुनि से वरदान मिला है
यह तुमको निज तप-बल से?

विश्व-विभव के हो उत्थान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

हो सबसे स्मरणीय पुरातन
तुम जगती के शिक्षालय;
मुनियों के उपदेश खिले हैं
बनकर कुसुम और किसलय।

भरा हुआ है तुममें ज्ञान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

निरपराधिनी सीता का जब
किया राम ने निर्वासन;
तब तुमने ही जीवित रक्खा
उसको दे-दे आश्वासन।

हो महान तुम करुणावान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

श्रमित-भ्रमित-तापित मनुष्य को
तुम सदैव अपनाते हो;
अपनी शीतल छाया देकर
उर का ताप मिटाते हो।

जग-सेवा के हो व्याख्यान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

शकुन्तला की करुण-कथा से
रहकर सभी समय गुंजित;
तापस-मुनियों के भी मन को
करते हो तुम दया-द्रवित।

भ्रान्त लोक में शान्त महान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

दीन-मलीन विश्व की छाया
कभी न तुमको छूती है;
राजहंसिनी सदा तुम्हारे
प्रेम-लोक की दूती है।

हो तुम जग-जीवन अम्लान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

जब प्रेमी पद-चिह्न किसी के
खोज-खोज थक जाता है;
तब विश्राम तुम्हारी ही मृदु
गोदी में वह पाता है।

हो सुख-शान्ति-सदन अविमान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

पशुओं के विश्राम-सदन हो
वन-विहगों के क्रीड़ा-स्थल;
शोभागार सरस सुमनों के
हो चंचल पर अटल, अचल।

शैलों के सुन्दर परिधान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

जग का सुन्दर प्रथम हास है
छिपा तुम्हारी लाली में;
वेद-ऋचायें झूल रही हैं
तरु की डाली-डाली में।

महर्षियों की हो सन्तान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

प्रथम विकास विश्व का सुखमय
हुआ तुम्हारे आँगन में;
जग-जीवन का प्रथम प्रकंपन
हुआ तुम्हारे जीवन में।

हो जगती के तुम अभिमान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

कितनी ही अनुपम समृद्धियाँ
यह जग तुमसे पाता है;
सदा तुम्हारे ही शरीर से
सौरभ उड़-उड़ जाता है।

बनता है विमान पवमान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

वर वसन्त की सब विभूतियाँ
छिपी तुम्हारे हैं तन में;
जगती का इतिहास छिपा है
कोमल कलियों के मन में।

क्यों न मिले तुमको सम्मान ?
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

बड़े हुए श्रीकृष्ण लोट कर
वृन्दावन की ही रज में;
उनकी सभी प्रेम-लीलायें
देखी थीं तुमने ब्रज में।

राधा के सुख-स्वप्न अजान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

कहीं मोरनी नाच रही है
कहीं भ्रमरियाँ गाती हैं;
कहीं कोकिला कूक रही है
कल-कलियाँ मुसकाती हैं।

वल्लरियों का तना वितान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

कहीं तितलियाँ खेल रही हैं
मृगियाँ कहीं विचरती हैं;
कहीं मानिनी वन्य विहगियाँ
मान विहग से करती हैं।

पावन - प्रेम - सुधा - रस - खान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

कहीं अप्सरायें क्रीड़ा-रत
फूली नहीं समाती हैं;
कहीं सोम-रस पी किन्नरियाँ
झूम - झूम कर गाती हैं।

सुंदर - स्वर्ग - सदन - उपमान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

कहीं शिलाओं का आलिङ्गन
कर-कर झरने झरते हैं;
खिले प्रसून कहीं किरणों से
आँख-मिचौनी करते हैं।

हो तुम जगत-प्रेम-आख्यान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

पुष्प पराग चढ़ाते तुमको
लता हृदय अर्पण करती;
मधु ऋतु लेकर तुम्हें गोद में
तृण-तृण में है छवि भरती।

विधि का अनुपम रुचिर विधान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

तुम सदैव आलोक व्योम का
सिर पर धारण करते हो;
पर तुम छाया-लोक हृदय में
सदा छिपाये रहते हो।

दोनों प्रिय हैं तुम्हें समान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

वसुधा की गोदी में लेटे
शिशु-समान तुम हो सुंदर;
तुम्हें कौमुदी सुधा पिलाती
निज उर में ही भर-भर कर।

हो तुम अपनी ही मुसकान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान !

कितने ही लोगों को तुमने
ज्ञान दिया वरदान दिया;
प्रेमी-जन को ध्यान दिया वर-
मुनियों को सम्मान दिया।

दी ब्रज को मुरली की तान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

वनिताओं को वसन-विभूषण
तुमने प्रथम प्रदान किया;
पुष्पायुध को सुमन-शरासन
जग को रसमय गान दिया।

दी वीरों को तीर-कमान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

सिंचकर शकुन्तला - दमयन्ती
ब्रज-वनिता के दृग-जल से;
बड़े हुए इतने तुम जग में
तपस्वियों के तप-बल से।

जनक-नन्दिनी के दुख-गान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

अपनी-अपनी ओर तुम्हें सब
ऋतुयें खींचा करती हैं;
जलद-घटायें तुम्हें प्रेम के
जल से सींचा करती हैं।

सबको प्रिय हो प्राण-समान,
हे कानन कल-कान्ति-निधान!

अमर गान

पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

शशि ने होकर हर्षित अपार,
दी बहा गगन से सुधा-धार।
संसार-प्रेम के शिशु अजान,

पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

जग को ये तारा-वृन्द मौन,
हैं भेज रहे सन्देश कौन ?
किस दिव्य लोक के उपाख्यान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

नाचतीं अप्सरायें ललाम,
आनन्द-मग्न है स्वर्ग-धाम।
नूपुर की है छिड़ रही तान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

आतीं सागर-उर खोल-खोल,
गाती हैं लहरें लोल-लोल।
पाकर उनसे संगीत-दान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

उठते हैं उर में दिव्य भाव,
पड़ता है प्राणों पर प्रभाव।
होता है जग को आत्म-ज्ञान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

है फैल रहा जग में प्रकाश,
अथवा है जीवन का हुलास।
सारी वसुधा है दीप्तिमान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

फूले न समाते आम्र-बौर,
बनकर ऋतुपति के मंजु मौर।
है तना पल्लवों का वितान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

हैं खिले सुमन वन में अनन्त,
कोकिल-रव से मुखरित दिगन्त।
करता जग है पीयूष-पान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

सन् सन् बहती है मृदु बतास,
पत्तों का मर् मर् साभिलाष।
कुछ कहता-सा है आसमान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

पीकर संगीत-सुधा रसाल,
सोता है सुख से जग विशाल।
है स्वप्न-लोक में लगा ध्यान,
पुलकित करते हैं विश्व-प्राण, नभ में गुञ्जित ये अमर गान।

प्रेम

सर्वदा सुखमय है संसार,
प्रेम है जीवन का आधार।

नयन से नयन महा छविमान,
अधर से अधर सुधा-रस-खान
हृदय से हृदय प्रमोद-निधान,
प्राण से प्राण विमुग्ध महान,
यही कहते हैं बारंबार,
प्रेम है जीवन का आधार।

रवि-मुखी उषा अनन्त-सुहाग,
शशि-मुखी सन्ध्या शुचि-अनुराग,
प्रफुल्लित-शतदल-वदन तड़ाग,
भव्यता से भूषित भू-भाग,

कह रहे नित्य पुकार-पुकार,
प्रेम है जीवन का आधार।

ललित लतिकाओं से पवमान,
पादपों से वल्लरी-वितान,
कुसुम-कलियों से अलि-कुल-गान,
विहङ्गम से विहगी का मान,

बता देते हैं सभी प्रकार,
प्रेम है जीवन का आधार।

वारिधर से चपला का प्यार,
सिन्धु से सरिता का व्यवहार,
चन्द्र से रजनी का अभिसार,
वायु से लता-अङ्ग-व्यापार,

प्रकट करते हैं यही विचार,
प्रेम है जीवन का आधार।

लोक-लोचन का दिव्य प्रकाश,
मनुज-जीवन का विमल विकास,
चिरस्थायी उर का उल्लास,
विश्वपति का अनन्त आभास,

जगत के यौवन का उपहार,
प्रेम है जीवन का आधार।

मनोहर सुरपुर का आख्यान,
गगन में सूर्य्य-चन्द्र-आह्वान,
मही की सुषमा का सम्मान,
विश्व को अमरों का वरदान,

कवि-जनों का पवित्र उद्गार,
प्रेम है जीवन का आधार।

अनन्त यौवन

शाश्वत है जीवन,
है अनन्त यौवन।

रंजित हो अनुराग-राग से
कर मृदु आलिङ्गन;
सायं प्रात नित्य मिलते हैं
वसुधा और गगन।

यह है प्रेम-मिलन,
है अनन्त यौवन।

खिलते ही रहते हैं वन में
सुरभित सरस सुमन,
मधु-वर्षा करती है कोयल
कर गुञ्जित कानन।

जीवन है मधुवन,
है अनन्त यौवन।

प्रेम - गगन - गंगा में बहते
अमरों के गायन,
लाता रहता है वन वाहन
सतत गन्धवाहन।

खिल जाता है मन,
है अनन्त यौवन।

मुसकाते रहते हैं मन में
नभ के तारागण;
तारापति के साथ देखकर
लहरों का नर्त्तन।

जन - मन-अनुरंजन,
है अनन्त यौवन।

करता है प्रतिदिन प्रभात में
जग-दृग - उन्मीलन;
मुग्धा-सी लज्जित ऊषा का
सरस प्रथम दर्शन।

संतत सौख्य-सदन,
है अनन्त यौवन।

कलियों के अधखुले दृगों में
भर-भर कर चुम्बन;
करते रहते हैं मदमाते
मधुप मधुर गुंजन।

अद्भुत पागलपन,
है अनन्त यौवन।

भीनी-भीनी शीतरश्मि की
कोमल कान्त किरण;
कर जाती है नित्य निशा में
प्रेम - सुधा - सिंचन।

मुदमय मनभावन,
है अनन्त यौवन।

अस्ताचल को रवि करता है
सन्ध्या-समय गमन;
विरह-व्यथा से हो जाती है
वसुधा सजल-नयन।

जग का जीवन-धन,
है अनन्त यौवन।

खोल-खोलकर ललित लता का
किसलय - अवगुंठन;
बार-बार चूमा करता है
सुन्दर वदन पवन।

उर-अम्बर - सुख - घन,
है अनन्त यौवन।

रह जाता है कभी न अपना
अपना प्रेमी मन;
हृदय हृदय का ही बनता है
प्रणय - सूत्र - बन्धन।

सन्तत प्रिय-चिन्तन,
है अनन्त यौवन।

गुंजित है मृदु नूपुर-ध्वनि से
जग का भव्य भवन;
लिखते हुए नहीं थकते हैं
प्रेम - कथा कविजन।

परम - प्रफुल्ल - वदन,
हे अनन्त यौवन।

लज्जा से छवि का रहता है
नत सदैव आनन;
देख उसे है तृप्त न होता
जग अपलक लोचन।

दिव्य - रूप - वन्दन,
हे अनन्त यौवन।

विधि करता रहता है सन्तत
अनुपम रूप - सृजन;
प्रेमी चकित किया करता है
छवि का अभिनन्दन।

सरल सरस पावन,
हे अनन्त यौवन।

चंचल वीचि-भृकुटि से कर-कर
शत-शत धनु-खंडन;
खोती है सागर से मिलकर
सरिता अपनापन।

भव्य - भाव - भाजन,
है अनन्त यौवन।

दो हृदयों में एक भावना
एक भाव - व्यञ्जन;
एक कल्पना, एक कामना
एक राग - रञ्जन।

एक प्रेम - बन्धन,
है अनन्त यौवन।

मृदु किसलय कुसुमों से विरचित
मंजुल बालापन;
पल्लव अधर, कुन्द दशनावलि
सरसिज दृग-आनन।

भव - भव्यता - भवन,
है अनन्त यौवन।

देखी और अदेखी छवि का
  सुखद स्वप्न - दर्शन;
निर्निमेष लोचन अवलोकन
  पुलकित उर-स्पन्दन।

मृदु मानसिक मिलन,
है अनन्त यौवन।

गिरि कानन में कहाँ जायँ
  है कहीं न सूनापन;
लिये पुष्प - धन्वा रहता है
  सदा समीप मदन।

सुख - समूह - साधन,
है अनन्त यौवन।

प्रभात

सोने का संसार !
उषा छिप गई नभस्थली में
देकर यह उपहार ।
लघु-लघु कलियाँ भी प्रभात में
होती हैं साकार ।
प्रात-समीरण कर देता है
नव-जीवन-संचार ।

लोल-लोल लहलही लतायें
स्वर्णमयी सुकुमार।
झुकी जा रही हैं ले तन में
नव-यौवन का भार।
भ्रमर छूट कर पंकज-दल से
करने लगे विहार।
भानु-करों ने खोल दिया है
कारागृह का द्वार।
कल-किरणें हैं शयन-सदन की
मंजुल वंदनवार।
सजनी! रजनी की सुख-स्मृति ही
बस अब है आधार।

मुसकान

कहाँ से आई यह मुसकान ?
कहाँ है इसका जन्मस्थान ?
रूप-सागर की लहर समान,
हुई है प्रकट महा छविमान ।

मनोहर देह-लता का फूल,
समझकर उसको शोभा-मूल।
रहे हैं दृग-अलि उस पर भूल,
सरासर है यह उनकी भूल।

सम्पदा शैशव की सविशेष,
रह गई यही एक अब शेष।
वही है अब भी भोला वेश,
नहीं है कृत्रिमता का लेश।

हृदय की नीरव मधुमय तान,
बन गई आकर क्या मुसकान?
मदन के मोहन मन्त्र समान,
कर रही मन को मुग्ध महान।

किसी को हुआ न पूरा ज्ञान,
किन्तु सब करते यह अनुमान,
दन्त-मुक्ताओं की द्युतिमान,
ज्योति है विमल मधुर मुसकान।

हृदय का है पावन उल्लास,
मुखाम्बुज का है विमल विकास।
दामिनी क्या तजकर आकाश,
कर रही मुख पर मंजु विलास?

अलौकिक शोभा का आगार,
सरसता-सुन्दरता का सार।
मनोरम मुख पर मंजु अपार,
बह रही रूप-सुधा की धार।

क्यों न लें दृग-चकोर पहचान?
कहेगा कौन उन्हें नादान?
कला मुख-कलानाथ की मान,
हो रहे उस पर मुग्ध महान।

मधुरता-मंजुलता की खान,
भाव की भागीरथी समान।
प्रेम का मुकुर महा छविमान,
जान पड़ती है मृदु मुसकान।

हृदय का है वह दिव्य प्रकाश,
मधुर जीवन का है मधुमास।
हुआ जो उर में आत्म-विकास,
मिला है उसका भी आभास।

अनन्त संसार

जग - जीवन - संचार अनन्त,
है सदैव संसार अनन्त।

है प्रिय विश्व-विकास अनन्त,
पावन प्रेम-प्रकाश अनन्त।
सफल-विफल अभिलाष अनन्त,
है उर का आभास अनन्त।

भव-वैभव सुख-सार अनन्त,
है प्रमुदित संसार अनन्त।

वारिधि-वीचि-विलास अनन्त,
है ज्योतित आकाश अनन्त।
है सुमनों का हास अनन्त,
है मधुमय मधुमास अनन्त।

है कवि का उद्‌गार अनन्त,
है छवि का संसार अनन्त।

हैं उर के उपदेश अनन्त,
हैं दृग के सन्देश अनन्त।
हैं मन के आदेश अनन्त,
हैं तन के हृदयेश अनन्त।

है जीवन-उपहार अनन्त,
है यह प्रिय संसार अनन्त।

हैं जग के संघर्ष अनन्त,
जीवन के आदर्श अनन्त।
है प्रकर्ष-अपकर्ष अनन्त,
हैं सुख-दुख के वर्ष अनन्त।

है लोचन-जल-धार अनन्त,
है पीड़ित संसार अनन्त।

हैं उर के संताप अनन्त,
जीवन के अभिशाप अनन्त।
भूल-चूक अनुताप अनन्त,
जग का मौन-विलाप अनन्त।

रोग-शोक दुर्वार अनन्त,
है दुख का संसार अनन्त।

मान और अभिमान अनन्त,
ज्ञान तथा अज्ञान अनन्त।
पतन और उत्थान अनन्त,
है आदान-प्रदान अनन्त।

है विचार-अविचार अनन्त,
है विचित्र संसार अनन्त।

नव-यौवन का प्रात अनन्त,
प्रेम-मिलन की रात अनन्त।
प्रथम प्रणय की बात अनन्त,
है रस की बरसात अनन्त।

मुग्ध नयन-व्यापार अनन्त,
है प्रेमी संसार अनन्त।

है उर का उल्लास अनन्त,
है आशा - विश्वास अनन्त।
जग का हास-विलास अनन्त,
सुखद प्रेम-परिहास अनन्त।

वसुधा का शृङ्गार अनन्त,
है सुख का संसार अनन्त।

आँसू

अविरल तरल नयन-जल-धार,
छल-छल छलक-छलक पड़ती है
खोल हृदय के द्वार।

सज-धज कर मृदु व्यथा-सुन्दरी
तज कर सब घरबार,
दुःख - यामिनी में जीवन की
करती है अभिसार।

तप्त हृदय से खींच-खींचकर
पीड़ाओं का सार,

ठहर-ठहर रुक-रुक चलती हैं
ले दुख-दल का भार।

किस दृग-वल्लभ के वियोग में
पाकर व्यथा अपार,

नयन-पुतलियाँ बिखराती हैं
निज मोती के हार ?

कुसुमाकर

विश्व-वाटिका के शृङ्गार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

वन-विहगावलि डोल-डोल कर,
वर वचनावलि बोल-बोल कर,
सुमनावलि उर खोल-खोल कर,
मधुपावलि मधु घोल-घोल कर,

करती हैं स्वागत-सत्कार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

पङ्कज फूले हैं न समाते,
भ्रमरी-सहित भ्रमर हैं गाते,
तरु हैं पल्लव-पाणि हिलाते,
बहुविधि सब हैं तुम्हें रिझाते,

कोयल है कर रही पुकार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

वृक्षावलि कुसुमाञ्जलि प्यारी,
सुमनावलि सुगन्धि सुखकारी,
कलिकायें मृदु छवि दृग-हारी,
वनस्थली निज निधियाँ सारी,

देती हैं तुमको उपहार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

बैठ विटप - सिंहासन ऊपर,
राजदंड सुमनों का लेकर,
ताज शीश पर बौरों का धर,
तुम ऋतुराज बने हो सुंदर,

हो वसन्त हो तुम्हीं बहार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

वन-विहगों के कल-कूजन हो,
मधुपों के मधुमय गुञ्जन हो,
कलियों के अध-खुले नयन हो,
वनस्थली के जीवन-धन हो,

प्रकृति-प्रिया के प्राणाधार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

लता-द्रुमों के प्रेम-सदन हो,
मृदु सुमनों के शोभा-धन हो,
मदन-महीपति के स्यन्दन हो,
नव-नारी-उर के स्पन्दन हो,

महामहिम हो सभी प्रकार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

हरित भूमि की हरियाली में,
नव पलाश-दल की लाली में,
मृदु पुष्पों की मधु-प्याली में,
तरुओं की डाली-डाली में,

होते हो सदैव साकार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

समरस्थल है कुसुमित कानन,
बना गन्ध-वाहन है वाहन,
है अति सुन्दर सुमन-शरासन,
है हुंकार मधुर अलि-गुञ्जन,

विश्व-विजय के हो अवतार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

मादकता कोयल के मन में,
मृदु सुवास सुकुमार सुमन में,
भर देते हो छवि वन-वन में,
कली-कली के कोमल तन में,

हो दानी तुम परम उदार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

नव-उमंग भर पादप गण में,
उत्फुल्लित करते हो क्षण में,
कर प्रवेश लतिका के तन में,
स्वयं सिहर उठते हो मन में,

विश्व-प्रेम के पारावार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

हो सुख के साधन जीवन में,
हो प्रकाश तुम प्रेम-गगन में,
हो सौरभ तुम मलय-पवन में,
हो सुषमा-समूह कानन में,

पतझड़ के हो उपसंहार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

दैन्य-दुःख से पीड़ित मन में,
विरह-रात्रि के शून्य-सदन में,
सुख-निद्रा-विरहित लोचन में,
जग से उदासीन जीवन में,

ला दो निज सुख का संसार,
ऐ कुसुमाकर शोभागार !

भारत

हो तुम प्राची-रवि-रश्मि-माल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

हे गुणगण के गौरव-गणेश !
हे सुरपुर के वैभव अशेष !
हे सप्त-सिन्धु-सेवित विशेष !
आचार्य जगत के आर्य-देश !

हो जगत-प्राण तुम प्रणत-पाल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

हे आदि तपस्वी पुण्यवान !
हे आदि सभ्यता के निधान !
हे आदि यती के साम-गान !
हे आदि जगत के उपाख्यान !

हो आदि ज्ञान-तरु तुम रसाल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

हे आदि काल के शूर-वीर !
गम्भीर नीर-निधि से गँभीर।
हे विश्व-विजेता समर-धीर !
हे अखिल सिन्धु के विपुल तीर !

हो तुम मानव-मानस-मराल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

हे ऋद्धि-सिद्धि के रुचिर धाम !
सुषमा के लीलास्थल ललाम।
हे जन्म-सिद्ध साधक अकाम !
हे दिव्य-काम, हे दिव्य-नाम !

हो जग-जीवन के उषःकाल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

हे दीन-बन्धु नय-दया-स्रोत !
हे दुखियों के दुख-जलधि-पोत !
हे विश्व - प्रेम से ओत-प्रोत !
हे दिनमणि निशिवासर उदोत !
हो हिमगिरि-मस्तक उच्च-भाल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

हे अनुरागी त्यागी अपार !
हे कर्म-योग-रत शुचि-विचार !
हे गुरु - ज्ञानी दानी उदार !
हे अखिल सृष्टि के स्वर्ग-द्वार !
हो नव्य पुरातन वृद्ध-बाल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

हे विपुल विश्व के विधि-विकास !
हे अन्तर-रवि के प्रिय प्रकाश !
हे भव-विभूतियों के विलास !
हे चिदानन्द के चिर-निवास !
हे सुर-तरु पुष्पित डाल-डाल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

हे सत्य-शील संयम-निधान !
हे मेधावी सु-चरित्रवान !
हे शक्ति-भक्ति-भाजन सुजान !
हे निज विनीतता से महान !

हो तुम वसुधा के प्रेम-जाल,
हे विश्व-वन्द्य भारत विशाल !

शिक्षा

शिशु ने दुनिया में आकर
रो-रो कर हँसना सीखा;
लघु होकर बढ़ना सीखा
गिर-गिर कर चलना सीखा।

वीरों ने इस वसुधा में
मर-मर कर जीना सीखा;
प्रेमी ने आँसू पी-पी
अधरामृत पीना सीखा।

कितने ही चक्कर खा कर
चङ्गों ने चढ़ना सीखा;
भूखे-प्यासे रह-रह कर
विहगों ने उड़ना सीखा।

उर छेद-छेद कर अपना
मुरली ने गाना सीखा;
मिट-मिट कर वारिधरों ने
पानी बरसाना सीखा।

सिर पटक-पटक पत्थर पर
झरनों ने झरना सीखा;
गुरु गिरिवर से गिर-गिर कर
नदियों ने बहना सीखा।

पहले पतंग ने आकर
निज देह जलाना सीखा;
जल-जल कर दीप-शिखा में
फिर प्रेम निभाना सीखा।

घट-बढ़ कर शशि ने जग को
पीयूष पिलाना सीखा;
नीचे गिर उदय-शिखर पर
सविता ने आना सीखा।

हो कैद कञ्ज-कलिका में
अलि ने मँड़राना सीखा;
हो छन्द-बद्ध कविता ने
प्रिय रस सरसाना सीखा।

चाँदनी

थी खिली पलाश-द्रुमाली-सी
संध्या सुहासिनी की लाली।
मिल गई प्रभाली थी दोनों
आनेवाली - जानेवाली।

हो गईं दिशायें रञ्जित-सी
इस अरुण मनोज्ञ प्रभाली से।
पर निकल पड़ी काली रजनी
सन्ध्या की सुन्दर लाली से।

दिनमणि की जो किरणें दिन में
थीं फैली जग के कण-कण में।
वे ही जाकर निशि के नभ में
हँसती-सी थीं तारागण में।

इस निभृत निशा की गोदी में
सो रहे सृष्टि के कण-कण थे।
बस तारागण ही आपस में
कर रहे मौन-संभाषण थे।

लज्जा से नतवदना प्राची—
ललना का आनन लाल हुआ ?
धीरे-धीरे गगनस्थल में
प्रकटित सुंदर शशि-बाल हुआ।

खेलने लगा सुन्दर शशि-शिशु
मणि-जटित गगन के आँगन में।
तारावलि उसकी प्रभा देख
खिल गई मुदित होकर मन में।

शशि ने सारे जगतीतल पर
निज कीर्त्ति-कौमुदी छिटकाई।
चढ़ किरण-जाल के वाहन पर
वह हंसवाहिनी-सी आई।

वसुधा से आकर लिपट गई
वह बाल सखी - सी मनभाई।
मिल कर उससे पुलकित-सी हो
वसुधा मन ही मन मुसकाई।

अब प्रकृति-नटी की रंगभूमि
सज गई खूब है मनभाई।
है शशि की किरणों ने उस पर
चाँदनी - चाँदनी फैलाई।

क्या शुभ्र-हासिनी शरद्-घटा
अवनी पर आकर है छाई ?
अथवा गिर कर नभ से कोई
सुरबाला हुई धराशायी ?

सोती बालाओं के समीप
वातायन से वह जाती है।
प्रिय शशि-समान उनके सुन्दर
मुख चूम-चूम सुख पाती है।

निर्जन विपिनों में घुस-घुस कर
किसकी तलाश वह करती है ?
वह देश-देश में ग्राम-ग्राम में
किसके लिए विचरती है ?

नभ से अवनी पर आने से
मानों वह भी थक जाती है।
श्रम-स्वेद-कणों से ओस-बिन्दु
धरणीतल पर टपकाती है।

सागर-सरिता की लहरों से
हिल-मिल कर क्रीड़ा करती है।
वन-उपवन और सरोवर में
वह प्रभा-पुञ्ज-सी भरती है।

शैलों के शिखरों पर बैठी
वह मन्द-मन्द मुसकाती है।
मृदु पवन-विकम्पित द्रुमावली
झुक-झुक कर चँवर डुलाती है।

जिसके समीप वह जाती है
उसका स्वरूप धर लेती है।
है बहु-रूपिणी बाल-छवि-सी
छवि-छवि में छवि भर देती है।

लेटी सुमनों की शय्या पर
वह है वियोगिनी बाला-सी।
वसुधा के वक्षस्थल पर है
शुचि स्वेत सुमन की माला-सी।

प्रतिबिम्बित चञ्चल जल में हो
शशि-प्रभा और भी खिलती है।
सागर की ऊँची लहरों पर
चाँदनी चाँद से मिलती है।

पर्वत की चोटी पर चढ़ कर
वह करती कौन इशारा है?
सन्देश भेजती क्या कुछ वह
शशि को किरणों के द्वारा है?

फूलों के मृदु उर में घुस कर
निज जीवन भूला करती है।
हिलते कोमल किसलय-दल पर
वह भूला भूला करती है।

नक्षत्रों से ज्योतित नभ की
वह है अति सुन्दर छाया-सी।
संसार अचेतन है जिसमें
है परब्रह्म की माया-सी।

अनन्त जीवन

पावन प्रेम-सदन,
है अनन्त जीवन।

विश्व-मोहनी सुन्दरता का
पद-पद पर प्रसरण;
चूमा करती हैं रवि-किरणें
जिसके चारु चरण।

जग-छवि—अवलोकन,
है अनन्त जीवन।

हैं पल्लवित विटप - शाखायें
कुसुमित है कानन;
मधु मकरन्द दान करता है
खिल-खिल सुमन-सुमन।

कोकिल-कल-कूजन,
है अनन्त जीवन।

रवि के सुखकर कर-स्पर्श से
परम-प्रफुल्ल - वदन;
खिली कमल-कलियाँ हैं सर में
अनुपम शोभा-धन।

मधुप-मधुर - गुञ्जन,
अनन्त जीवन।

पिता-प्रेम-पादप में विकसित
मञ्जुल मृदुल सुमन;
माता-हृदय-सिन्धु से निकला
रुचिर रत्न द्युति-धन।

शैशव जन-रञ्जन,
है अनन्त जीवन।

नई उमंग, तरंग नई है
नया हृदय-कम्पन;
है नवीन आशा-अभिलाषा
नया प्रेम-बन्धन।

जग का नव यौवन,
है अनन्त जीवन।

है अनुभव-भाण्डार ज्ञान का
आकर बूढ़ापन;
जिसमें बस अतीत सुख-स्मृतियाँ
हैं चिर-सञ्चित धन।

मनन और चिंतन,
है अनन्त जीवन।

रवि-शशि का विनिमय करती हैं
दिवा-निशा प्रतिदिन;
सायं-प्रात विश्व का मुख है,
धोता तरल तुहिन।

रजनी-दिवस-मिलन,
है अनन्त जीवन।

कलियों की कोमल चितवन है
वन - वैभव - वन्दन;
तरु-पातों का मृदु मर्मर् है
जग-छवि-अभिनन्दन ।

दिव्य - रूप - दर्शन,
है अनन्त जीवन ।

सावन की रिमझिम घन-चुम्बित
चपला की चितवन;
वन्य विहगियों का कल-कूजन,
शस्यावलि शोभन ।

मन - मयूर - नर्तन,
है अनन्त जीवन ।

मृदु साकार भव्य भोलापन
शैशव भव-मोहन;
उर-उल्लास विश्व का विस्मय
प्रेम-गगन-छवि-घन ।

जग का तुतलापन,
है अनन्त जीवन ।

मृदु सौरभ अर्पण करती है
सुरभित मलय-पवन;
तरु - शाखायें उसे चढ़ातीं
हैं फल-पत्र-सुमन।

विश्वदेव - वन्दन,
है अनन्त जीवन।

आशा और निराशा का है
उर क्रीड़ा-कानन;
शान्ति-अशान्ति विकास-ह्रास का
जग ही है आँगन।

सुख-दुख-आवर्त्तन,
है अनन्त जीवन।

दीनों का दुखमय जीवन है
निर्मल शून्य गगन;
तीव्र ज्योति से विकल नयन हैं
पीड़ित है तन-मन।

व्यथित-हृदय-स्पंदन,
है अनन्त जीवन।

कठिन जेठ की दोपहरी में
तप्त धूलि में सन;
कृषक-तपस्वी तप करते हैं
तप से स्वेदित तन।

श्रम-सीकर कण-कण,
है अनन्त जीवन।

निष्ठुर निर्दयता का नर्त्तन,
पशुता का तर्जन;
बर्बरता की घोर घटा का
वज्र-नाद गर्जन।

वसुधा-उर-कम्पन,
है अनन्त जीवन।

जग का विकसित सरसिज-आनन
सजल-सरोज-नयन;
योगी और वियोगी जन का
हर्षित क्लेशित मन।

हास-विलास-रुदन,
है अनन्त जीवन।

त्याग-सुगन्धि-सुवासित विकसित
शुचि अनुराग-सुमन;
दया-द्रवित विस्फुरित दृगों का
स-करुण अवलोकन।

पर-दुख-कातर मन,
है अनन्त जीवन।

गति से प्रगति, प्रगति से अवगति,
अवगति से चिन्तन;
निखिल-निरीक्षण, मनन-विवेचन,
पठन और पाठन।

ज्ञान-जलधि-मन्थन,
है अनन्त जीवन।

नीति-निदर्शन, सत्य-समर्थन,
नय का अनुमोदन;
पावन-प्रेम-सिन्धु-अवगाहन,
सज्जन-संकीर्तन।

पर-हित-सम्पादन,
है अनन्त जीवन।

लोभ-मोह-विद्रोह - विसर्जन,
प्रेम - प्रसून - चयन;
अनुसन्धान और अन्वेषण
सतत आत्म-चिन्तन।

प्रिय - दर्शन अ-नयन,
है अनन्त जीवन।

उपवन

खिलती हैं गृह-उपवन में
कल कोमल-कोमल कलियाँ।
खेला करती हैं उनसे
सुंदर सुकुमार तितलियाँ।

कुसुमित रहती है सन्तत
तरुओं की डाली - डाली।
होती है कभी न खाली
फूलों की मदिरा-प्याली।

हैं मधुप मचाते ऊधम
क्या उनका हाल बतायें ?
मृदु-पल्लव-पाणि हिला कर
करती हैं मना लतायें।

वृक्षों से लिपटी बेलें
हैं फूली नहीं समाती।
बढ़ती ही जाती हैं वे
जब तक मुँह चूम न पाती।

कोयलें बैठ डालों पर
गाती हैं पंचम स्वर में।
है सुधा बरसती रहती
तरुओं के प्रेम-नगर में।

जो रंग-बिरंगी छवियाँ
थीं छिपी हरित वसनों में।
वे ही हो गई प्रकट हैं
सुन्दर - सुन्दर सुमनों में।

सौरभ का कोश अपरिमित
है पुष्पों के परिमल में।
कोमलता का आलय है
नव कोमल किसलय-दल में।

है खिंचा लोक सुषमा का
लघु कलिका के नयनों में।
इतिहास अनेक छिपे हैं
मृदु सुमनों के सु-मनों में।

है अठखेलियाँ मचाती
मलयानिल सर के जल में।
हिलती - डुलती रहती है
सर की शोभा पल-पल में।

सर में शत-शत शतदल हैं
सर की शोभा शतदल में।
हँसती-सी रवि की किरणें
तैरा करती हैं जल में।

है कभी मञ्जु कुञ्जों में
द्युतिदाम दमक-सा जाता।
है कभी लता - पुंजों में
चन्द्रमा चमक-सा जाता।

बादल - से काले - काले
केशों को देख निराले।
नाचा करते हैं सन्तत
पालतू मोर मतवाले।

हर फूल और पत्ते में
हैं छिपी मंजु प्रतिमायें।
सीखा करती हैं उनसे
लतिकायें सदा अदायें।

तरु-शाखाओं पर नर्त्तन
सीखती विहग - बालायें।
लगती हैं शून्य गगन में
संगीत - पाठशालायें।

क्रीड़ा करती हैं निशि में
शशि की किरणें उपवन में।
होती है आँखमिचौनी
मृदु मुकुलों के मधुवन में।

है सुघर सुमन - शय्या पर
सोती शोभा उपवन की।
चाँदनी खड़ी हँसती है
प्रतिमा-सी भोलेपन की।

खिलती हैं चम्पक - कलियाँ
जलती हैं दीप-शिखायें।
कोमल गुलाब के दल पर
होती हैं प्रेम - कथायें।

वेला से बेला मिलकर
खल जाता है पल भर में।
हीरों का हार पहन कर
है खड़ी चमेली घर में।

मृदु-गुंजन ही बस धन है
काले-काले अलियों का।
कोमलता ही जीवन है
कोमल-कोमल कलियों का।

हैं भरी अतुल शोभायें
सुन्दर सुरभित उपवन में।
द्रुम-द्रुम में लता-लता में
तृण-तृण में सुमन-सुमन में।

विकास

अटल है जग - जीवन-मधुमास,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास ।

सुमन खिलते हैं नित्य अनन्त,
भ्रमर करते हैं ध्वनित दिगन्त।
कहाँ है ह्रास कहाँ है अन्त ?
जहाँ पतझड़ है, वहीं वसन्त।

नाश तो केवल है परिहास,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास ।

देख लो यह है स्वर्ण प्रभात,
खिल रहे हैं सर में जलजात।
कहाँ है तिमिर कहाँ है रात,
कहाँ है स्वप्न-लोक अज्ञात ?

कर रहा है दिननाथ प्रकाश,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास।

भानु-किरणों से खिंचकर आप,
वारि-बूँदें बनती हैं भाप।
घुमड़ता है फिर जलद-कलाप,
भूमि का हरता है सन्ताप।

दामिनी हँसती है सोल्लास,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास।

नग्न छवि वसुधा की सुकुमार,
कहाँ है छिपी छोड़ संसार ?
धार कर सुमनों का मृदु हार,
धरा है शोभित शोभागार।

कह रहा है जग का इतिहास,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास।

जगत के प्रेमी-जन का प्यार,
बन गया व्योम-यान साकार।
कर रहे हैं वे गगन - विहार,
खुल गया उन्हें स्वर्ग का द्वार।

हँस रहा है ज्योतित आकाश,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास।

मिट गई है दूरता अपार,
बन गया है नवीन संसार।
विश्व-प्रेमी की पंच-पुकार,
तार पहुँचाता है बेतार।

अखिल जग खिंच आया है पास,
चिरन्तन ध्रुव विश्व-विकास।

तिमिर है निशि का मलिन दुकूल,
दुःख हैं जीवन-तरु के फूल।
विफलता है अपनी ही भूल,
अधोगति है उन्नति का मूल।

ह्रास है दो दिन का अवकाश,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास।

शान्ति का है अशान्ति में वास,
छिपा संशय में है विश्वास।
वेदना में भी है उल्लास,
अश्रु में प्रतिबिम्बित है हास।
पूर्ति का है अभाव आभास,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास।

कह रहा है विचित्र विज्ञान,
कह रहा है श्रुतियों का गान।
कह रहा है कवि प्रतिभावान,
कह रहा है शिशु भी नादान।
कह रहा है उर का उल्लास,
चिरन्तन है ध्रुव विश्व-विकास।

अनन्त प्रेम

अखिल विश्व के प्राणाधार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

आदिकाल में जब विरञ्चि ने
विपुल विश्व निर्माण किया;
आकर चुपके से संसृति को
तब तुमने ही प्राण दिया।

तुमने खोल दिया उर-द्वार,
अहे प्रेम जग - जीवन-सार !

आदि ज्योति तुम हो अनादि की
प्रथम व्योम-उर-पुलक प्रचुर;
धरा-गर्भ से थे निकले तुम
बनकर प्रथम शस्य-अङ्कुर।
आदि पुरुष के प्रथम विचार,
अहे प्रेम जग - जीवन-सार!

वसुधा के भीने अञ्चल में
जग के सूने आँगन में;
नग्न विश्व की सुन्दरता में
आदिमौन निर्जन वन में।
तुमने प्रथम लिया अवतार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

प्रथम चेतना चेतन जग की
प्रथम ज्ञान के मृदु अंकुर;
हो तुम उर के प्रथम प्रकम्पन
प्रथम जगत-कल्पित सुरपुर।
प्रथम विश्व-छवि के अभिसार,
अहे प्रेम जग - जीवन-सार!

मृदुल मुकुल-सा मंजु मनोहर
शिशु का प्रदुर्भाव हुआ;
उसके पहले ही माता का
प्रकटित प्रेम-प्रभाव हुआ।

उर से निकल पड़ी पयधार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

यथासमय यौवन-मदिरा से
मदोन्मत्त संसार हुआ;
और साथ ही यहाँ तुम्हारा
उर-उर में संचार हुआ।

विश्व-सुंदरी के शृंगार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

एक साथ ही इन दोनों का
तुमने जग में किया सृजन;
कलियों में मुसकान मनोहर
मधुपों में मधुमय गुञ्जन।

उर-पादप-प्रसून सुकुमार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

तारागण - भूषण से भूषित
रजनी का अभिसार हुआ;
मिलनातुर मंजुल मयङ्क का
विमल ज्योति-विस्तार हुआ।

दोनों के तुम हो आधार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

हुईं सलोनी ललित लतायें
यौवन - गुरुता से नत-तन;
चूम-चूम तरुओं ने उनका
किया प्रेम से आलिङ्गन।

मिला तुम्हें फूलों का हार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

पावस में तुमने दिखलाया
युगल प्रेमियों का जीवन;
नूतन सघन घनों का गर्जन
मत्त मयूरों का नर्त्तन।

जग ने सीखा दोल-विहार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

शरद्-पूर्णिमा को सागर में
अभिनव वीचि-विलास हुआ;
तारागण के साथ चन्द्र का
लहरों में प्रतिभास हुआ।

तुमने रचा नया संसार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

ले सुन्दर सुमनों की डाली
जग में प्रकट वसन्त हुआ;
और तुम्हारा हृदय हृदय में
रुचिर विकास अनन्त हुआ।

वन-वन में छा गई बहार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

जैसे ही उत्पन्न जगत में
प्रेम-विभोर चकोर हुआ;
वैसे ही मंजुल मयंक भी
उसके मन का चोर हुआ।

तुम्हें मिला आनन्द अपार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

निपट लजीली उषा-वधू की
प्रेममयी चल चितवन में;
अतुल रागिनी चिर-सुहागिनी
सन्ध्या के प्रिय-दर्शन में—
सबसे प्रथम हुए साकार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

लताद्रुमों को सुमन मनोहर,
सुमनों को मृदु हास दिया;
पिक को मधुर कण्ठ, जुगुनू को
तुमने रुचिर प्रकाश दिया।
हो तुम पावन परम उदार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

वन को मंजु बहार, अनिल को
तुमने दी सुवास सुखकर;
पर बेचारे चातक को दी
स्वाति-बूँद की प्यास प्रखर।
दिया गगन को शून्याकार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

झर-झर झरने लगे उपल से
अगणित झरने निकल-निकल;
बहने लगीं उतर कर नीचे
गिरि से नदियाँ मचल-मचल।

तुमने किया दया-सञ्चार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

हो प्रेरित तुमसे ही रवि ने
जग को अतुल प्रकाश दिया;
पाकर सुधा तुम्हीं से शशि ने
संसृति को उल्लास दिया।

किया तुम्हीं ने ज्योति-प्रसार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

जहाँ सुनाई पड़ा विश्व में
दुःख - दीनता का क्रन्दन;
जहाँ दिखाई पड़ी मनुजता,
जग - उत्पीड़न से उन्मन—

वहाँ तुम्हारी हुई पुकार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

जब-जब अत्याचार भयंकर
अतिशय पापाचार हुआ;
तब-तब सदय स्वरूप तुम्हारा
निराकार साकार हुआ।
हरने को असह्य भू-भार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

अमर लोक के चिर-संचित धन
सुरपति से भी अभिनन्दित;
हुए विश्व में विदित विश्वजित
राम कृष्ण से भी वन्दित।
विश्व-वन्द्य हो सभी प्रकार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार !

शकुन्तला के करुण कथानक
तुम हो सीता के क्रन्दन;
भय से भगी नीच कीचक के
सैरन्ध्री-उर के स्पन्दन।
ब्रज-वनिता के मनोविकार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार।

हो अतीत के गीत मनोहर
हो भविष्य के मुख उज्ज्वल;
वर्त्तमान के पथ-दर्शक हो
संसृति के आयुध कोमल।

विश्व-विपञ्ची की झङ्कार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

आदि स्रोत सङ्गीत-कला के
प्रेमी अमरों के गायन;
शुचि शृङ्गार तथा करुणा के
तुम हो निराकार वाहन।

हो वीरों के तुम हुंकार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

हो दिनमणि विद्रोह-तिमिर के
हो शशि शान्ति-सुधा-भाजन;
हो दुर्भाव-विपिन-दावानल
हो तुम दुःख-शोक-मोचन।

आधि-व्याधि के हो उपचार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

मनोभावना के दर्पण हो
काव्य-कुसुम के हो परिमल;
करुणा-सागर के दृग-जल हो
विश्व-तपस्या के प्रतिफल।
महर्षियों के वेदोच्चार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

भाव-लोक के इष्ट-देव हो
स्वप्न-लोक के हो स्वामी;
रहता है कुछ छिपा न तुमसे
हो तुम तो अन्तर्यामी।
मनोभाव हो तुम अविकार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

हो शैशव के भोलेपन तुम
यौवन के मादक जीवन;
नारी-जीवन के अमूल्य धन
हो तुम विदित विश्व-मोहन।
हो वृद्धों के विमल विचार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

निखिल प्रेमियों के हो जीवन
विरही जन के अवलम्बन;
हो अनङ्ग के सुमन-शरासन
भावुक-उर के मृदु कम्पन।

हो भावुकता के भाण्डार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

मनोरथों के भव्य भवन हो
सुन्दरता के आकर्षण;
मञ्जु युवतियों की चल चितवन
सती हृदय के आभूषण।

हो कोमलता के आगार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

वसुधा के सतृष्ण लोचन हो
जग-जीवन के हो मधुवन;
अनुरागी के कोमल मन हो
हो त्यागी के तुम जीवन।

हो पवित्रता के उद्‌गार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

अन्धकारमय गृह के दीपक
दुःख-दैन्य के कातर स्वर;
हो नाविक नैराश्य-सिन्धु के
हो तुम करुणा के सागर।

स्वयं-सिद्ध तुम हो अधिकार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

अन्धों के तुम दिव्य-चक्षु हो
हो गूँगों के सरस वचन;
निर्विकार निरपेक्ष निरामय
हृदय-विटप-अभिलाष-सुमन।

मृदु भावों के हो अवतार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

कृष्णसार ने जिसे खुजाया
उस कुरङ्गिनी के मन में;
भ्रमर-गान ने जिन्हें जगाया
उन कलियों के कानन में—

मिलता है तुमको सत्कार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

सदा तुम्हारे अमर गान हैं
गाये जाते सुरपुर में;
वही यहाँ गूँजा करते हैं
सदन-सदन में उर-उर में!

जग - नाटक के सूत्राधार,
अहे प्रेम जग - जीवन-सार!

कोकिल और भ्रमर कहते हैं
कथा तुम्हारी मधुवन से;
सागर से सरिता कहती है
चपला कहती है घन से।

विश्व - पुलक के पारावार,
अहे प्रेम जग - जीवन-सार!

द्रुम-द्रुम में पल्लव-पल्लव में
सुमन-सुमन में वन-वन में,
कथा तुम्हारी लिखी हुई है
निखिल विश्व के जीवन में।

निहित तुम्हीं में है संसार,
अहे प्रेम जग-जीवन-सार!

मनोभावनाओं के नायक !
हो जग - उन्नायक सुखकर;
हृदय-लोक के आदि निवासी !
हो तुम जीवन के सहचर ।

कोमल कविता के आधार
अहे प्रेम जग - जीवन-सार !

वन-रोदन

विफल नहीं है वन-रोदन !
उसको सदा सुना करते हैं
कान लगाकर सुमन-सुमन ।

उसको ही सुनकर होती हैं
लता-वल्लियाँ सजल-नयन ।
पल्लव-पाणि हिलाकर देतीं
वृक्षावलियाँ आश्वासन ।

मेरे साथ - साथ करती है
सदा प्रतिध्वनि भी क्रन्दन।
फैलाती है उसे विश्व में
सन-सन बह कर मलय पवन।

सिर धुनने लगती है कोयल
तज कर अपना कल-कूजन।
मुझे घेर करते हैं मधुकर
गुञ्जन के मिस करुण रुदन।

सजनी! रो-रो कर मैं कर दूँ
क्यों न भला गुंजित कानन?
सुनता होगा किसी कुञ्ज में
छिप कर मेरा जीवन-धन।

जीवन-धन

विकसित मुखपङ्कज मनभाया,
मेरा जीवन-धन है आया।

नभ में घनमाला घिर आई,
क्षिति में हरियाली है छाई,
अपनी खोई निधि मनभाई,
वसुधा ने फिर से है पाई।

आनन्द हृदय में है छाया,
मेरा जीवन-धन है आया।

गूँगे विहगों ने बोल दिया,
कल-कण्ठों ने रस घोल दिया,
कमलों ने निज उर खोल दिया,
जग को सौरभ अनमोल दिया।

दिनकर ने निज कर फैलाया,
मेरा जीवन - धन है आया।

वन-वल्लरियाँ शृंगार किये,
सुन्दर सुमनों का हार लिये,
नभ-पतित तुहिन-प्रेमाश्रु पिये,
पूजा करती हैं ध्यान दिये।

प्रेमोपहार मधु है लाया,
मेरा जीवन - धन है आया।

इस भाँति फूल सब फूल गये,
अपना अपनापन भूल गये,
वन-दृश्य दृगों में झूल गये,
सुख-शूल हृदय में हूल गये।

तो भी मैं जान नहीं पाया,
मेरा जीवन - धन है आया।

पावस की सुन्दर हरियाली,
है शरद निशा की उजियाली,
फूलों से लदी हुई डाली,
बन गई मधुर मधु की प्याली।

सब ऋतुओं ने सुख सरसाया,
मेरा जीवन - धन है आया।

कलियों ने निज मुँह खोल दिया,
छाया ने मौन प्रणाम किया,
वसुधा ने पग-पग चूम लिया,
संसृति ने छवि-पीयूष पिया।

भ्रमरावलियों ने गुण गाया,
मेरा जीवन - धन है आया।

उर में मृदु भाव नवीन जगे,
जग-लोचन हर्षित हो उमगे,
आ गये दृगों में प्राण ठगे,
देखने लगे शुचि प्रेम-पगे।

मुझसे न किसी ने बतलाया,
मेरा जीवन - धन है आया।

हो गया प्राण-सञ्चार नया,
खुल गया हृदय का द्वार नया,
छा गया सृष्टि में प्यार नया,
बन गया एक संसार नया।

जगती ने आदर दिखलाया,
मेरा जीवन - धन है आया।

सब देख उसे हो गये मुदित,
गिरि-कानन सभी हुए विकसित,
तारे नभ में हो गये चकित,
कौमुदी हो गई आकर्षित।

है प्रकृति-प्रिया उसकी छाया,
मेरा जीवन - धन है आया।

सुरपुरवासी अन्तर्यामी,
रवि-शशि उसके हैं अनुगामी।
है वह अनन्त-पथ का गामी,
है अखिल चराचर का स्वामी।

है यह संसृति उसकी माया,
मेरा जीवन - धन है आया।

कामना

मिल जाय तरुणता मेरी
जग के अनन्त यौवन में।
लय हो मेरा लघु जीवन
जग के विशाल जीवन में!

मैं सुमन-सदृश हँस-हँसकर
जग को भी साथ हँसाऊँ।
सौरभ समीर-सा लेकर
मैं फैल विश्व में जाऊँ।
कोकिल-सा पञ्चम स्वर में
गाकर मैं रस बरसाऊँ।
बन कर वसन्त सुषमा का
सुखमय संसार बनाऊँ।
करता सब काल रहूँ मैं
वन्दना विश्व की मन में।
लय हो मेरा लघु जीवन
जग के विशाल जीवन में!

खिलकर सरोज-सा सर में
जग का उर-कमल खिलाऊँ।
मिल सागर की लहरों में
जग के स्वर में मैं गाऊँ।
रवि के समान वसुधा में
मैं स्वर्ण - प्रभा फैलाऊँ।

शशि की किरणों में छिप कर
जग को पीयूष पिलाऊँ।
सद्भाव - सुमन मैं भर दूँ
जग के मानस-उपवन में।
लय हो मेरा लघु जीवन
जग के विशाल जीवन में !

लेकर शिक्षा जग - सेवी
द्रुम-लता - प्रसून - पवन से।
सच्चा सेवक बन जाऊँ
मैं जग का तन-मन-धन से।
बन्दी बन जाऊँ बँध कर
मैं विश्व - प्रेम - बन्धन से।
देखूँ सदैव मैं जग को
बस जग के ही लोचन से।
पक्षी - समान विचरूँ मैं
स्वच्छन्द सदा गिरि-वन में।
लय हो मेरा लघु जीवन
जग के विशाल जीवन में !

उर का विकास हो मेरे
जग के आनन्द-कमल में।
मन-मधुप मुदित हो मेरा
सन प्रेम-पुष्प-परिमल में।
हों मग्न प्राण दुखियों के
पावन दृग-गंगाजल में।
लोचन जल-स्रोत बहा दें
दुखमय जीवन-मरुथल में।
मिल जाय चित्त का मेरे
सूनापन शून्य गगन में।
लय हो मेरा लघु जीवन
जग के विशाल जीवन में!

जीवन-चिन्ता-सागर की
लहरों में मैं लहराऊँ।
दुख-शैलों से टकरा कर
मैं कभी नहीं घबराऊँ।
पद-पद में गति-उन्नति मैं
पल-पल में रति दिखलाऊँ।

सीमा के भीतर ही मैं
अपनी असीमता पाऊँ।
देखें नक्षत्र चकित हो
मेरा उत्थान पतन में।
लय हो मेरा लघु जीवन
जग के विशाल जीवन में !

अनन्त उल्लास

जग-उर-कमल-विकास
है अनन्त उल्लास।

विकसित हैं वर विपिन-स्थलियाँ,
खेल रही हैं रुचिर तितलियाँ,
हैं खिल रहीं कञ्ज की कलियाँ,
घेर रही हैं भ्रमरावलियाँ।

पावन प्रेम - प्रकाश
है अनन्त उल्लास।

उज्ज्वल - लोहित नीले-पीले,
रुचिर रंग से रँगे रँगीले,
ओस - कणों से गीले - गीले,
मृदु सुगन्धि से सने रसीले।

कल-कुसुमों का हास
है अनन्त उल्लास।

चमक-चमक चंचला गगन में,
ज्योति जगा देती है घन में,
ला समीर मृदु सौरभ वन में,
भर देती है सुमन-सुमन में।

जग का पुण्य प्रयास
है अनन्त उल्लास।

विटप विटप से सुमन-सुमन से,
लता लता से पवन पवन से,
वन से वन, उपवन उपवन से,
कोकिल कूक-कूक जन-जन से—

कहते हैं मधुमास
है अनन्त उल्लास।

मत्त मयूरी है इठलाती,
भ्रमरी रहती है मँड़राती,
मृगी चौंकती है मदमाती,
है विहंगिनी उड़-उड़ जाती।

प्रिया - प्रेम - परिहास
है अनन्त उल्लास।

देख रहे हैं सब पादपगण,
खींच रहा है वसन समीरण,
लतिकायें हो क्रोधित क्षणक्षण,
फेंक रही हैं सुमन-विभूषण।

लज्जा का उच्छ्वास
है अनन्त उल्लास।

कभी थिरकती कभी लजाती,
उठ-उठ गिर-गिर भाव बताती,
रत्नावलि-सी है बन जाती,
लघु लहरें हैं चित्त चुराती।

वारिधि-वीचि-विलास
है अनन्त उल्लास।

गगनस्थली खोल दृग - तारे,
वनस्थली अनुपम छवि धारे,
निज आँचल मोदिनी पसारे,
मंजु मोरनी पक्ष उभारे—

देती हैं आभास,
है अनन्त उल्लास ।

नभ में अगणित दीप जलाये,
क्षिति में सुंदर साज सजाये,
वन में पल्लव फूल बिछाये,
प्रकृति-प्रिया है ध्यान लगाये—

पुरुष-मिलन-अभिलाष,
है अनन्त उल्लास ।

———